**ओ३म्**

**‘भव्य वृहद यज्ञ एवं सत्संग का आयोजन’**

**-मनमोहन कुमार आर्य, देहरादून।**

 ऋषि भक्त कर्नल रामकुमार आर्य जी देहरादून में विगत 5 दशकों से निवास कर रहे हैं। हम भी लगभग 4 दशकों से उनके सम्पर्क में हैं। आप आरम्भ से ही ऋषि व आर्यसमाज के भक्त है। आपके पिता सहित भाईयों व बहिनों का पूरा परिवार आर्य विचारों का है। स्वाध्याय में आपकी गहरी रूचि है। कई वर्षों से आपकी योजना थी कि आपके बड़े भ्राता मेजर करतार सिह जी के सान्निध्य में एक वृहद यज्ञ का आयोजन हो जिसमें आपके पांचों भाई व बहिनों के परिवारों सहित ससुराल पक्ष व पुत्री एवं पुत्रों के ससुराल पक्ष के भी सभी लोग सम्मिलित हों। ईश्वर की कृपा से उनका यह स्वप्न आज सफल वा साकार हुआ। आपके सभी भाई व बहिनों के परिवार एवं अन्य संबंधी भी इस आयोजन में सम्मिलित हुए। गुरुकुल पौंधा के आचार्य डा. धनंजय जी के ब्रह्मत्व तथा गुरुकुल के आचार्य डा. यज्ञवीर जी, आचार्य चन्द्रभूषण शास्त्री, चार ब्रह्मचारियों सहित आर्यजगत् के सुप्रसिद्ध भजनोपदेशक पं. सत्यपाल सरल जी एवं अनेक गणमान्य व्यक्तियों की उपस्थिति में आज का वृहद यज्ञ सफलतापूर्वक सम्पन्न हुआ जिसमें चार वेदों के शतकों से घृत व साकल्य की आहुतियां दी गईं। यहां यह भी वर्णन कर दें कि कर्नल रामकुमार आर्य जी देहरादून में गजियांवाला, घघोड़ पंडितवाड़ी ग्राम की पहाडियों की एक चोटी पर लगभग पंाच बीघा भूभाग पर स्थित अपने सुविधाजनक भवन में निवास करते हैं। आपके निवास के चारों ओर के निजी खाली भूभाग पर एक सहस्र से अधिक लोग सत्संग आदि का लाभ ले सकते हैं। चारों ओर मसूरी आदि पर्वतों की पहाड़ियां एवं वन दृष्टि गोचर होते हैं। यह स्थान प्रदूषण मुक्त स्थान है जहां न नगरीय हलचल है और न किसी प्रकार का कोलाहल। इसके साथ ही प्राकृतिक छटा भी अविराम दर्शनीय एवं चित्ताकर्षक है। हमें प्रसन्नता है कि हम भी आज के इस भव्य एवं श्रद्धामय वातावरण में सम्पन्न यज्ञ में सम्मिलित होकर इसके साक्षी बने हैं।

 कार्यक्रम का शुभारम्भ वैदिक रीत्यानुसार यज्ञ से हुआ। कर्नल रामकुमार आर्य जी के बड़े भाई मेजर करतार सिंह जी ने डा. धनंजय आर्य जी को आज के यज्ञ का ब्रह्मा वरण किया। अन्य उपस्थित सभी विद्वानों व मंत्रोच्चार के लिए उपस्थित चार ब्रह्मचारियों का भी विधिवत वरण किया। यज्ञारम्भ से पूर्व गायत्री मन्त्र का उसके हिन्दी पद्यानुवाद सहित सामूहिक मधुर वाणी में गाकर पाठ किया गया। मंच आर्य विद्वानों डा. यज्ञवीर जी, डा. धनंजय आर्य, पं. सत्यपाल सरल, पं. चन्द्रभूषण शास्त्री और चार मंत्रोच्चार करने वाले ब्रह्मचारियों से शोभायमान हो रहा था। गायत्री मन्त्र के बाद अनेक विधियां सम्पन्न करने के बाद स्वस्तिवाचन का पाठ हुआ जिससे सारा वातवारण भक्तिमय बन गया। स्वस्तिवाचन की समाप्ति पर आचार्य धनंजय जी ने कहा कि हमारा जीवन इस यज्ञ से स्वस्तिमय हो जाये। सत्य, श्री व यश हमें प्राप्त हो। हम सब ऐश्वर्य के स्वामी हों। हमारे सभी सहकर्मी सभी दिशाओं में बढ़ने वाले व सबको आनन्दित करने वाले हों। वात, पित्त व कफ से हमारा शरीर बना है। हमारा यह शरीर उन दोषों से सन्तुलित बना रहे और हम रोगों से मुक्त रहे। आचार्य जी ने कहा कि हमारी वाणी सत्य बोलने वाली होनी चाहिये। हमारी नासिका जीवन को बढ़ाने वाली हो। मैं हाथों से सत्कार्यों को किया करूं। मेरे दोनों पैर सत्यमार्ग पर चलें। हमारे शरीर की पूरी प्रक्रिया व कार्य ईश्वर की शिक्षाओं के अनुरूप हों। सच्ची उपासना कर हम सदैव प्रसन्न चित्त रहें। हमारी आत्मा सदैव श्रेष्ठ कार्यों को करने में लगी रहे। हमारी आत्मा ईश्वर व उसकी रचना को चहुं ओर देखे वा अनुभव करें व उसके बताये सत्य व न्याय के मार्ग पर चले। आचार्य धनंजय जी ने यज्ञ की विभिन्न विधियों को सम्पन्न कराते हुए कहा कि जीवन को आनन्दित करने के लिए हमें वेदवाणी को पढ़ने, सुनते व उसका अध्ययन करते रहना चाहिये। सभी सत्य विद्याओं का मूल परमेश्वर है। ज्ञान का आदि स्रोत भी परमेश्वर है। वेद विद्या को जानने से आनन्द की प्राप्ति होती है। परमात्मा ने हमें वेद ज्ञान दिया है। वेदों को पढ़ना, सुनना व सुनाना व उस पर आचरण करना हमारा परमधर्म है। उन्होंने कहा कि ज्ञान, कर्म, उपासना और विज्ञान चारों वेदों के मुख्य विषय हैं। ज्ञान व विज्ञान की एकात्मकता अथर्ववेद में है। हमारा जीवन दूसरों के हित व कल्याण के लिए होना चाहिये। इसी बीच यज्ञ के मन्त्रों से आहुतियां दी जा रही थी। यहां पहुंचकर चारों वेदों के शतकों से आहुतियांे का क्रम आरम्भ हुआ जिसके बाद पूर्वान्ह 11ध्15 बजे पूर्णाहुति हुई।

 विद्वान आचार्य डा. धनंजय जी ने कहा कि प्रारब्ध से मनुष्य को परिवार व परिवेश मिलता है। प्रारब्ध को बढ़ाते हुए और उसे सुधारते हुए नये संस्कार बनाने का सुअवसर परमात्मा हमें देता है। आचार्य जी ने चार आश्रमों ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ एवं संन्यास की चर्चा भी की। प्रथम आश्रम में मनुष्य अपने शरीर का बल व बुद्धि प्राप्त करते हैं। इस आश्रम में ब्रह्मचारी दूसरे आश्रम की तैयारी व उसके निर्माण में जीवन लगाता है। गृहस्थ आश्रम में पूर्व प्राप्त ज्ञान का प्रयोग करना आरम्भ करते हैं। गृहस्थ आश्रम में अपने परिवार को आगे बढ़ाते व उसकी उन्नति करते हैं। वानप्रस्थ और संन्यास आश्रम में आसक्तियों को दूर कर परमात्मा की शरण में रहकर उसका ध्यान व चिन्तन आदि करते हैं। इन आश्रमों में मनुष्यों को ईश्वर का ध्यान करते हुए उसमें लीन होना व खोना होता है। आचार्य जी ने चार आश्रमों पर विस्तार से प्रकाश डाला और अनेक बातें बताईं। उन्होंने यह भी कहा कि जब पुत्र का पुत्र हो जाये तो घर से अलग हो कर प्रभु के चिन्तन में मन व आत्मा को लगाना चाहिये। सन्यास में ईश्वर व वेद का प्रचार ही करना होता है। उन्होंने कहा कि जीवन में सुख व दुःख दोनों साथ साथ चलते हैं। मन व आत्मा को ईश्वर की ओर ले जाने को आचार्य जी ने जीवन का उद्देश्य बताया।

 आचार्य डा. यज्ञवीर जी ने चार आश्रमों की चर्चा करते हुए कहा कि राजा महाराजा भी प्राचीन काल में इस आश्रम व्यवस्था का पालन करते थे। आपने कालिदास लिखित रघुवंश से एक श्लोक का पाठ किया। इस पुस्तक के अध्ययन से ज्ञात होता है कि वैदिक काल में राज परिवार के बालक अपने बाल्यकाल में आचार्यों व ऋषियों के सान्निध्य में रहकर विद्याओं का अभ्यास करते थे। उन्होंने कहा कि राम व लक्ष्मण ने वनों में गुरु के सान्निध्य में रहकर विद्याओं का अभ्यास किया था। बेटे का बेटा हो जाये तो वैदिक आश्रम व्यवस्था के अनुसार तृतीय आश्रम वानप्रस्थ की अवधि आरम्भ हो जाती है। जैसा आपको अनुकूल बने, करें। मुनि वृत्ति का आश्रम लें। वानप्रस्थ में रहकर हमारे पूर्वज योग का अभ्यास कर अपने शरीर से ईश्वर की प्राप्ति की साधना करते थे। हमारे समाज व जीवन में वही संस्कृति बह रही है। उसी संस्कृति का हमें सेवन करना है। वैदिक परम्परा का पालन करते हुए हम परस्पर साथ रहे, एक साथ बैठे व यज्ञ करें। आचार्य जी ने कहा कि यजुर्वेद परमात्मा को कवि अर्थात् क्रान्तदर्शी बताता है। वेदों से यह भी ज्ञात होता है कि हम कैसे परस्पर प्रेम से रहे। आचार्य जी ने कहा कि गाय के अपने नवजात बच्चे से प्रेम की तरह मनुष्यों को भी परस्पर प्रेम करना चाहिये। हमें दूसरों के कष्टों को दूर करने में तत्पर रहना चाहिये। आचार्य जी ने गुरुनानक देव एवं उनके शिष्य मर्दाना की कथा भी सुनाई जिसमें बुरे लोगों को बसने और अच्छे लोगों के उजड़ जाने की कामना की थी। उन्होंने कहा कि बुरे लोग उजड़ेगे तो देश व समाज को खराब करेंगे और अच्छे लोग उजड़ेंगे तो वह जहां जायेंगे वहां सुख व शान्ति स्थापित करेंगे। आचार्य डा. यज्ञवीर जी ने कहा कि हम जहां पर रहें, वहां अच्छाईयों को फैलाते रहे और दूसरों की सेवा करते रहे। आपने रामायण से राम व भरत का संवाद भी प्रस्तुत किया जिसमें रामचन्द्र जी भरत को कहते हैं कि तुम परस्त्री को माता समझना, पराये धन में लोभ मत करना, किसी मर्यादा अर्थात् पूर्वजों की अच्छी परम्पराओं व सिद्धान्तों को मत तोड़ना और कभी भी नीच व्यक्तियों में रूचि मत रखना। रामचन्द्र जी ने भरत को कहा कि मैं भी यही करता हूं इसी कारण प्रजा मुझे याद करती है। तुम करोगे तो प्रजा तुम्हें याद करेगी और मुझे भूल जायेगी। आचार्य जी ने कहा कि यदि तुम्हारी नीचों में रूचि हो गई तो तुम पतित हो जाओगे। उन्होंने कहा कि बड़े से बड़ा सज्जन व्यक्ति भी दुर्जनों व नीचों की संगति में पतित हो जाता है। यज्ञ का उदाहरण देते हुए आचार्य जी ने बताया कि यज्ञ की अग्नि की लोग पूजा करते हैं क्योंकि उससे मानव का कल्याण होता है। यज्ञ की आग्नि की सर्वत्र पं्रशंसा होती है। दूसरी ओर अग्नि यदि लोहे की संगति करती है तो उसे हथौड़ों से पिटना पड़ता है। उन्होंने कहा कि नीच दुर्योधन की संगति में भीष्म पितामह ने राजा विराट की गऊयें चुराई जिससे वह अपराधी बने और अपमानित हुए।

 इसके बाद आचार्य डा. धजंजय जी ने कहा कि समाज में आडम्बरों के कारण सामाजिक एकता भंग हो रही है। कोई मुस्लिम स्टेट तो कोई ईसाई साम्राज्य ढूंढ रहा है। हममें कोई शैव, कोई वैष्णव और कोई शाक्त है। धर्म के नाम पर समाज का विभाजन किया जा रहा है। उन्होंने कहा कि हमें ईश्वर का उपासक बनना चाहिये। मन्दिरों में भगवान को हमारे पौराणिक भाई ताला लगा कर रखते हैं। इस पर चुटकी लेते हुए एक श्रोता ने कहा कि ताला इसलिये लगाते हैं कि कहीं भगवान को कोई चुरा न ले। आचार्य जी ने कहा कि ईश्वर तो सर्वव्यापक है। उन्होंने कहा कि कुछ लोग कहते हैं कि ईश्वर अवतार लेता है। पौराणिकों के अनुसार अवतारी ईश्वर अपने हिसाब से अपने भक्तों को सुख देता है। आचार्य जी ने अन्धविश्वासों पर प्रहार किया। उन्होंने कहा कि निराकार, सर्वव्यापक, अखण्ड, सर्वज्ञ व सर्वशक्तिमान होने से ईश्वर का अवतार नहीं होता। ईश्वर की कोई प्रतिमा व उपमा नहीं है। ईश्वर कण कण में विद्यमान है। आयोजन स्थल के पास सन्तला देवी के मन्दिर का उल्लेख कर आचार्य जी ने कहा कि इस मन्दिर में बकरे और मुर्गे-मुर्गियों की बलि दी जाती है। पशुओं की बलि व हत्या पुण्य नहीं पाप कर्म है। वेद में वर्णित ईश्वर के स्वरूप को जानने का प्रयत्न करें। वेद के पथिक बने तो आपको सत्य का ज्ञान होगा। आचार्य जी ने कहा कि परमात्मा सर्वशक्तिमान है। वह शरीर रहित है। वेदानुसार नस नाड़ी के बन्धनों से भी मुक्त है। ईश्वर पूर्ण शुद्ध और अविद्या से रहित है। आचार्य जी ने महत्वपूर्ण बात यह कही कि यदि ईश्वर जन्म लेगा तो उसे अविद्या का दोष लगेगा। उन्होंने श्रोताओं से पूछा कि क्या हम श्री कृष्ण जी को ईश्वर का अवतार कह सकते हैं जिनके जीवनकाल में ही यादव वंश समाप्त हो गया। हमें श्री कृष्ण जी को अवतार नहीं अपितु महाभारत में वर्णित उनके दोषरहित चरित्र को मानना चाहिये। राधा व कृष्ण के पौराणिक सम्बन्धों को उन्होने कल्पित बताया। उन्होंने कहा कि परमात्मा हमारे रोम रोम में बसा हुआ है। सब संसार में प्रत्येक स्थान पर परमात्मा एक समान रूप से विद्यमान है, कहीं कम व अधिक किसी रूप में नहीं है। वेदानुसार ईश्वर की उपासना करें। वेदज्ञान को जाने और उसका ही अनुसरण करें। दूसरों को आनन्द दें और किसी प्रकार की निर्दोष प्राणियों की हिंसा न करें।

 आयोजन में प्रसिद्ध भजनोपदेशक श्री सत्यपाल सरल जी के भजन हुए है। उनका पहला भजन था **‘परमात्मा शक्ति दो साधना दो अटल वन्दना दो यही भावना दो। परमात्मा शक्ति दो साधना दो।।’** दूसरा भजन था **‘मैं मका में मकी हूं मुझे महसूस करो। दिल के मैं करीब हूं, मुझे महसूस करो।।’** सरल जी ने तीसरा भजन प्रस्तुत किया जिसके बोल थे **‘प्रभु तेरा ओम् नाम सबका सहारा है। वही सारे ब्रह्माण्ड का जीवन का आधार है।।’** भजनों के बाद कर्नल रामकुमार आर्य के बडें भ्राता मेजर करतार सिंह ने डा. धनंजय जी, डा. यज्ञवीर जी व अन्य भाईयों ने श्री सत्यपाल सरल, श्री चन्द्रभूषण शास्त्री, चार ब्रह्मचारियों आदि का वस्त्र एवं धन आदि से सम्मान किया। गांव के सबसे वृद्ध दो व्यक्तियों श्री मंगल सिंह एवं श्री दयाराम जी का भी वस्त्र प्रदान कर सम्मान किया गया। कार्यक्रम के समापन पर मेजर करतार सिंह ने सबका धन्यवाद किया। उन्होंने कहा कि यज्ञ ऐसा श्रेष्ठ कार्य है जिससे दूसरों को लाभ होता है। शिक्षक बच्चों को पढ़ाते हैं वह भी यज्ञ है। कृषक व मजदूर जो कार्य करते हैं वह भी यज्ञ ही है। हमने आज यहां परस्पर मिलकर देवयज्ञ किया है। आपने सबका पुनः धन्यवाद किया और कहा कि हम हर वर्ष यहां यज्ञ करेंगे। कर्नल रामकुमार आर्य जी ने भी हर वर्ष यज्ञ आयोजित करने की पुष्टि की और कार्य को सुगमतापूर्वक अंजाम देने के लिए एक सात सदस्यीय समिति के गठन की घोषणा की जिसमें चार पुरुष और तीन महिलायें होंगी। उन्होंने स्पष्ट किया कि इस कार्य के लिए समस्त धन एवं स्थान मेरा होगा। कार्यक्रम अपेक्षा के अनुरूप सन्तोषजनक रूप से सम्पन्न हुआ। समापन के बाद सामूहिक भोज हुआ। सबने भूमि पर पंक्तियों में बैठकर भोजन किया इसका एक उद्देश्य नगरों में भारतीय संस्कृति व परम्पराओं की रक्षा करना था। आगन्तुकों को सत्यार्थप्रकाश व आर्यसमाज का साहित्य भी भेंट किया गया। इत्योम् शम्।

 **मनमोहन कुमार आर्य**

**पताः 196 चुक्खूवाला-2**

**देहरादून-248001**

**फोनः09412985121**